Kis Kis Ko Aib Bataa Sakte Hain (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 219
Weekly Booklet : 219

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" की एक क़िस्त बनाम

किस किस को ऐब बता सकते हैं

सफ़हात 21

- पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला 03
- झूट जाइज़ होने की एक सूरत 06
- त़बीब को उ़यूब बयान करने का त़रीक़ा 09
- बत़ौरे अफ़्सोस किसी की बुराई बयान करना 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **किस किस को ऐ़ब बता सकते हैं**
सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल **1443** हि., अक्तूबर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

किस किस को ऐ़ब बता सकते हैं

येह रिसाला (**किस किस को ऐ़ब बता सकते हैं**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

येह मज़्मून ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़हा 226 ता 238 से लिया गया है।

किस किस को ऐब बता सकते हैं

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला **''किस किस को ऐब बता सकते हैं''** पढ़ या सुन ले, उसे अपनी ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक रोज़ बग़दादे मुअ़ल्ला के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर उन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह**

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शिब्ली पर इस क़दर शफ़क़त की वज्ह ? **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾

(پ11، التوبہ:128)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।

और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (القول البدیع، ص346)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रह़मतों का नुज़ूल होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआएं ज़रूर रंग लाती हैं, क्यूं कि वहां **अल्लाह व रसूल** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र होता है। **ह़ज़रते** इमाम **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حلیۃ الاولیاء، 7/335، رقم:10750) जब नेक बन्दों के तज़्किरों पर रह़मतों का नुज़ूल होता है तो जहां **अल्लाह व रसूल** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होगा वहां रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रह़मतें बरस रही हों वहां दुआएं क्यूं क़बूल न होंगी। ह़ज़रते अबू हुरैरा और ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम दोनों रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो क़ौम **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने के लिये बैठती है फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और रह़मत उन्हें ढांप

लेती है और उन पर सकीना नाज़िल होता है और **अल्लाह** अपने फ़िरिश्तों के सामने उन का ज़िक्र फ़रमाता है। (مسلم، ص1448 حدیث:2700) मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 305 पर है : सकीना से मुराद या तो ख़ास मलाएका हैं या दिल का नूर या दिली चैन व सुकून है।

ज़िक्र किसे कहते हैं ?

"**अल्लाह** हू और ह़क़ हू" की ज़र्बें लगाना बेशक ज़िक्र है। ताहम तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, ख़ुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा भी "**ज़िक्रुल्लाह**" में शामिल हैं। यक़ीनन **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी ज़िक्र के ह़ल्क़े हैं।

सारे आ़लम को है तेरी ही जुस्तजू जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरज़ू
याद में तेरी हर एक है सू बसू बन में वह़्शी लगाते हैं ज़र्बाते हू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" (312 सफ़ह़ात) ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 173 पर है : किसी बस्ती या शह़र वालों की बुराई की, मसलन येह कहा कि वहां के लोग ऐसे हैं, येह **ग़ीबत** नहीं क्यूं कि ऐसे कलाम का येह मक़्सद नहीं होता कि वहां के सब ही लोग ऐसे हैं बल्कि बा'ज़ लोग मुराद होते हैं और जिन बा'ज़ को कहा गया वोह मा'लूम (या'नी PARTICULAR) नहीं, **ग़ीबत** इस सूरत में होती है जब मुअ़य्यन व मा'लूम (या'नी जो पहचाने जा सकें ऐसे) अश्ख़ास की बुराई ज़िक्र की

जाए और अगर इस का मक़्सूद वहां के तमाम लोगों की बुराई करना है तो येह **ग़ीबत** है। (درمختار، 9/674)

लंगड़े की नक़्क़ाली

किसी लंगड़े की नक़्क़ाली में लंगड़ा कर चलना नीज़ किसी मख़्सूस मुसल्मान की किसी भी ख़ामी की नक़्ल उतारना **ग़ीबत** है बल्कि येह ज़बान से **ग़ीबत** करने से भी ज़ियादा बुरा है। क्यूं कि नक़्ल करने में पूरी तस्वीर कशी और बात को समझाना पाया जाता है जब कि कहने में वोह बात नहीं होती।

नाम लिये बिग़ैर ग़ीबत करना

नाम लिये बिग़ैर **ग़ीबत** करना गुनाह नहीं, हां अगर नाम तो न लिया मगर जिस को कह रहा है वोह समझ रहा है कि किस के बारे में बात हो रही है तो अब **ग़ीबत** है।

मुंह पर भी कह सकता हूं !

ग़ीबत करने वाले का येह समझना या कहना कि मैं उस के मुंह पर भी कह सकता हूं, इस को **ग़ीबत** के गुनाह से नहीं बचा सकता क्यूं कि **ग़ीबत** के ह़राम होने की अस्ल वज्ह **ईज़ाए मुस्लिम** है और मुंह पर कहने से उस का दिल ज़ियादा दुखेगा तो येह और भी बड़ा गुनाह हुवा। जिस की बुराई की गई वोह हंसने लगा इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि वोह अपनी बुराई सुन कर झूम उठा है, फ़ित्रतन आ़म आदमी अपनी ता'रीफ़ सुन कर ही ख़ुश होता है अपनी मज़म्मत सुन कर कोई ख़ुश नहीं होता लिहाज़ा अपनी मज़म्मत सुन कर हंसना येह "खिस्यानी हंसी" होती है कि आदमी मुरव्वत में या अपनी **झेंप** मिटाने के लिये ऐसे मौक़अ़ पर हंसता है ह़ालां कि अन्दरूनी त़ौर पर उस का दिल जल रहा होता है।

बन्द अल्फ़ाज़ में ग़ीबत

ता'रीज़ या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में भी **ग़ीबत** हो सकती है मसलन किसी की बुराई का तज़्किरा हुवा तो कहा : اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं "ऐसा" नहीं हूं, येह **ग़ीबत** है क्यूं कि येह भी बुराई करने का ही एक अन्दाज़ है इस का साफ़ मत़लब येही हुवा कि वोह "ऐसा" है।

कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी

किसी मुसल्मान के बारे में बात चली तो कहा : "छोड़ो यार ! मैं उस को जानता हूं, अगर कुछ कहूंगा तो **ग़ीबत** हो जाएगी।" ऐसा कहने वाला **ग़ीबत** कर चुका कि उस ने इस अन्दाज़ में उस की बुराई कर डाली !

इसी त़रह़ की ग़ीबत पर मब्नी मज़ीद 14 जुम्ले ❁ बस जी **अल्लाह** मुआ़फ़ करे, उस के बारे में आप को क्या बताऊं ❁ बस भाई क्या कहूं उस के लिये तो दुआ़ ही की जा सकती है ❁ यार ! उस को समझाना अपने बस की बात नहीं, जब उस की सूई अटक्ती है तो फिर किसी की नहीं सुनता ❁ आज कल उस की घूमी हुई है ❁ भई ! मैं तो इस से बाज़ आया मेरी सुनता ही कब है ❁ जब मत़लब होता है तो "हां जी हां जी" करता है इस के बा'द लिफ़्ट भी नहीं कराता ❁ अच्छा ! अच्छा ! दरवाज़े पर फुलां खड़ा हुवा है इस का कोई मत़लब पड़ा होगा ❁ उस से जान छुड़ाने की बड़ी कोशिश की मगर वोह तो बिल्कुल ही "चिपक" गया था ❁ मैं ने तो उसे टालने की बहुत कोशिश की मगर टस से मस नहीं हुवा ❁ यार ! वोह कहां किसी को घास डालता है ❁ उफ़ ! वोह मन्हूस कहां आ गया ! ❁ वोह तो नादान दोस्त निकला ❁ उस का काम नहीं वोह तो "सीधा आदमी" है (उ़मूमन "सीधा आदमी" कह कर बे वुक़ूफ़ या नादान या कम अ़क़्ल मुराद लेते हैं) ❁ कैसा मीठा मीठा बन रहा था !

ऐ़ब पोशी के लिये झूट जाइज़ होने की एक सूरत

ग़ीबत में एक बहुत बड़ी आफ़त येह भी है कि जब "एक फ़र्द" की **ग़ीबत** दूसरे के सामने की जाती है तो बा'ज़ अवक़ात वोह "एक फ़र्द" दूसरे की नज़र से गिर जाता है और शरीअ़त को येह क़त्अ़न ना गवार है कि एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार (DEGRADE) हो ह़त्ता कि मुसल्मान की **इ़ज़्ज़त** बचाने की निय्यत से बा'ज़ सूरत में **झूट** बोलने की भी इजाज़त है क्यूं कि मुसल्मान की जान, माल और इ़ज़्ज़तो आबरू की ह़िफ़ाज़त की शरीअ़त में निहायत ही अहम्मिय्यत है। इस की एक मिसाल मुलाह़ज़ा फ़रमाएं चुनान्चे आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" (312 सफ़ह़ात) ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 161 पर है : "किसी ने छुप कर बे ह़याई का काम किया है, उस से दरयाफ़्त किया गया कि तूने येह काम किया ? वोह इन्कार कर सकता है क्यूं कि ऐसे काम को लोगों के सामने ज़ाहिर कर देना येह दूसरा गुनाह होगा। इसी त़रह़ अगर अपने मुस्लिम भाई के भेद पर मुत्त़लअ़ हो तो उस के बयान करने से भी इन्कार कर सकता है।" (ردمحتار،9/705)

शरफ़ ह़ज का दे दे चले क़ाफ़िला फिर मेरा काश ! सूए ह़रम या इलाही
दिखा दे मदीने की गलियां दिखा दे दिखा दे नबी का ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

ख़ुद को ज़िल्लत पर पेश करना जाइज़ नहीं

मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की बहुत अहम्मिय्यत है। ख़ुद अपने हाथों अपनी इ़ज़्ज़त ख़राब करने की भी शर्अ़न मुमानअ़त है, लिहाज़ा ऐसे मुल्की क़वानीन पर अ़मल करना शर्अ़न ज़रूरी है जो कि क़ुरआनो

सुन्नत से न टकराते हों और उन पर अ़मल न करने में ज़िल्लत व मा'सियत का ख़त़रा हो। मसलन ड्राइविंग लाइसन्स के बिग़ैर स्कूटर, कार वग़ैरा चलाने की इजाज़त नहीं क्यूं कि चलाई और पकड़ा गया तो बे इ़ज़्ज़ती के साथ साथ झूट, रिश्वत और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा गुनाहों में पड़ने का क़वी इम्कान मौजूद है लिहाज़ा कई गुनाहों और जहन्नम में ले जाने वाले कामों से बचने के लिये ड्राइविंग लाइसन्स ही बनवा लिया जाए और गाड़ी चलाते वक़्त लाज़िमन अपने साथ रखा जाए। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 183 पर फ़रमाते हैं : महज़ बिला वज्हे शर्ई बल्कि बर ख़िलाफ़े वज्हे शर्ई एक गुनाह पर इसरार के लिये अपने नफ़्स को सज़ा व ज़िल्लत पर पेश किया और येह भी ब हुक्मे ह़दीस **ह़राम** है। जिल्द 29 सफ़ह़ा 93, 94 पर फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : जो शख़्स बिग़ैर किसी मजबूरी के अपने आप को बख़ुशी ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम में से नहीं है। (معجم اوسط، 1/147، حدیث:471) बहर ह़ाल अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है।

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है — हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही
सदा के लिये हो जा राज़ी ख़ुदाया — हमेशा हो लुत़्फ़ो करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुआ़ के लिये दरख़्वास्त देने का त़रीक़ा

बा'ज़ लोग जब किसी को दुआ़ के लिये मक्तूबात या रुक़आ़त भिजवाते हैं, तो उन में مَعَاذَالله ! अपनी गन्दी ह़रकात के इन्किशाफ़ात

करते बल्कि अपनी मां बहनों तक के लिये ह़या सोज़ बातें लिखने से बाज़ नहीं रहते ! मसलन मेरी मां या बहन या बेटी या बहू या बीवी के पराए आदमी से ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ात हैं। ह़द तो येह है कि इस्लामी बहनें भी एह़तियात़ नहीं करतीं, उन को इस अम्र का क़त़्अ़न एह़सास ही नहीं होता कि हमारी तह़रीर न जाने कौन कौन पढ़ता होगा और उस पढ़ने वाले को कैसे कैसे वसाविस आते होंगे । कोई लिखती है : मेरा शौहर या बाप कमाता नहीं बस सारा दिन घर में पड़ा रहता है और घर में झगड़े करता रहता है, सास या नन्द ज़ुल्म करती है, मेरा भाई जूआरी है, मेरी बहन किसी के साथ भाग गई है, मेरा भाई किसी लड़की के चक्कर में है, मेरा बेटा शराब पीता है, मेरी बेटी फ़ेशन कर के बे पर्दा घूमती है वग़ैरा। दुआ़ का कहने के लिये येह तफ़्सीलात बयान करने के बजाए मुब्हम (या'नी बन्द) अल्फ़ाज़ में बात करनी मुनासिब है मसलन बेटा या भाई या शौहर शराब या **जूए** की बुराई में मुब्तला है तो इस बुराई की और बुराई करने वाले की निशान देही किये बिग़ैर इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ करवा सकते हैं : ''मेरे एक क़रीबी अ़ज़ीज़ बा'ज़ बुरी आ़दतों में गिरिफ़्तार हैं उन की इस्लाह़ के लिये दुआ़ कर दीजिये'' यूंही बहन या बेटी भाग गई या किसी लड़के के चक्कर में पड़ गई तो इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ की दरख़्वास्त की जा सकती है : ''मेरी एक रिश्तेदार किसी ना क़ाबिले बयान बुराई में पड़ गई है उस के लिये दुआ़ कर दीजिये।'' इन अल्फ़ाज़ से दुआ़ करवाने में फ़ाएदा येह है कि चूंकि फ़र्द, मुअ़य्यन (या'नी PARTICULAR) न हुवा लिहाज़ा **ग़ीबत** का इम्कान अस्लन (या'नी बिल्कुल ही) ख़त्म हो गया। दूसरी बात येह कि मख़्सूस बुराई और ख़िलाफ़े ह़या अल्फ़ाज़ के बयान से भी बचत हो गई। हां अगर किसी ने दुआ़ करवाने की निय्यत से अपनी

या किसी मख़्सूस फ़र्द की ख़ामी या ऐ़ब किसी के आगे बयान कर दिया तो येह **गुनाह भरी ग़ीबत नहीं**, गुनाह भरी ग़ीबत उसी सूरत में होगी जब कि किसी मुअ़य्यन व मा'लूम फ़र्द की ख़ामी महज़ उस की बुराई करने की निय्यत से बयान की जाए।

त़बीब को उ़यूब बयान करने का त़रीक़ा

त़बीब या आ़मिल को ब निय्यते हुसूले इ़लाज उ़यूब बताने में ह़रज नहीं। अलबत्ता फ़र्दे मुअ़य्यन का तज़्किरा किये बिग़ैर काम चल जाता हो तो चला लीजिये मसलन "मेरा बेटा शराब पीता है" कहने के बजाए यूं कह दीजिये कि "मेरा एक रिश्तेदार शराब पीता है" अगर नाम वग़ैरा बताना ज़रूरी हो या ख़ुद अपनी ही ख़ामियां बयान किये बिग़ैर चारा न हो तो येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि उस त़बीब या आ़मिल ही को बताया जाए बिला ह़ाजत कोई भी दूसरा फ़र्द वोह बातें सुनने या जानने न पाए। बड़े डॉक्टर उ़मूमन अपने कमरे में अलग बुला कर मरीज़ से अह़वाल सुनते हैं मगर न जाने क्यूं इन की अक्सरिय्यत उस मौक़अ़ पर तआ़वुन के लिये बे पर्दा औ़रत साथ रखने का गुनाह करती है! चन्द बार मुझे जब ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा है तो राज़दारी की गुफ़्तगू न होने के बा वुजूद निगाहों की ह़िफ़ाज़त की ख़ातिर दरख़्वास्त कर के औ़रत को कमरे से बाहर भिजवा दिया है। हर एक को हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल करना चाहिये।

रूह़ानी इ़लाज के बस्ते पर राज़दारी का त़रीक़ा

सुवाल : दा'वते इस्लामी की "मजलिस रूह़ानी इ़लाज" की त़रफ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क रूह़ानी इ़लाज के बे शुमार बस्ते लगाए जाते हैं, दुखियारे लोग क़ित़ार लगा कर, अपने मसाइल बता कर फ़ी सबीलिल्लाह इ़लाज ह़ासिल करते हैं, इन में यक़ीनन राज़ की बातें भी होती हैं, हर एक

को अलग से वक़्त देना हमारे बस का रोग नहीं कोई ह़ल बता दीजिये। **जवाब :** रूह़ानी इ़लाज के ज़रीए़ शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखियारी उम्मत की ख़िदमत बेशक बहुत बड़ी सआ़दत है मगर इस मदनी काम और हर हर अ़मल को गुनाहों से पाक साफ़ रखना ज़रूरी है। हरगिज़ येह नहीं होना चाहिये कि एक मुस्तह़ब काम के लिये गुनाहों भरे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम होते रहें। लोगों तक आवाज़ न पहुंचे इस के लिये कोई ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार करना ज़रूरी है मसलन बस्ते के सामने इतने फ़ासिले पर कोई रुकावट रख दी जाए जहां तक आवाज़ न जा सके, जिस की बारी हो उसी को क़रीब बुलाया जाए, परेशानियां सुनने के लिये सिर्फ़ एक फ़र्द हो जो कि ख़ौफ़े ख़ुदा का ह़ामिल और मुसल्मानों के राज़ों का अमीन हो, बिला इजाज़ते शर्ई उस का कोई मुआ़विन हरगिज़ क़रीब न रहे। नीज़ दर्जे ज़ैल मज़्मून का बैनर या बोर्ड बनवा कर ह़त्तल इम्कान बस्ते के ऐ़न ऊपर की जानिब इस त़रह़ लगा दिया जाए कि क़ित़ार में मौजूद हर फ़र्द ब आसानी पढ़ सके नीज़ वक़्तन फ़वक़्तन उस मज़्मून का ए'लान भी किया जाता रहे। मज़्मून येह है :

कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा

लोगों को ब ग़रज़े इ़लाज मजबूरन राज़ भी बताने पड़ते हैं लिहाज़ा बस्ते पर होने वाली गुफ़्तगू को सुनने से दूसरा आदमी अपने आप को बचाए, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने ह़ालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या उस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा। (بخاری، 4/423، حدیث:7042)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जो दूसरों की ख़ुफ़्या बात छुप कर सुने उस के कान में क़ियामत के दिन सीसा गर्म कर के उंडेला जाएगा। ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिर पर है, इस में किसी तावील की ज़रूरत नहीं, वाक़ेई उसे क़ियामत में येह अ़ज़ाब होगा कि येह भी राज़ो नियाज़ का चोर है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/203) (ह़दीसे पाक की शर्ह़ बोर्ड या बैनर में न डलवाएं कि मज़्मून काफ़ी त़वील हो जाएगा, हां हैन्ड बिल वग़ैरा में शामिल करने में मुज़ायक़ा नहीं)

डॉक्टरों और आ़मिलों वग़ैरा के लिये

सुवाल : दूसरों की मौजूदगी में डॉक्टरों, ह़कीमों, आ़मिलों, समाजी कारकुनों और सियासी रहनुमाओं को भी ज़रूरतन अपने राज़ बताने पड़ते हैं, इस सिल्सिले में भी कुछ **मदनी फूल** दे दीजिये।

जवाब : हर मुसल्मान को चाहिये कि ख़ुद भी गुनाहों और उन के अस्बाब से बचे और अपनी मक़्दूर भर दूसरों को भी बचाए लिहाज़ा इन साह़िबान को भी ऐसी ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार करनी होगी कि एक का ऐ़ब दूसरा न सुन पाए। येह ह़ज़रात भी अगर मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो अपने यहां मज़्कूरा बोर्ड या बैनर लगवा लें और उस में लफ़्ज़ "बस्ते पर" की जगह अपनी ज़रूरत के अल्फ़ाज़ मसलन "पीर साह़िब से" "बाबा जी से" "डॉक्टर साह़िब से" "ह़कीम साह़िब से" वग़ैरा की तरकीब फ़रमा लें।

ग़ीबतों से बचूं, चुग़्लियों से बचूं हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम
बद कलामी न हो, यावह गोई न हो बोलूं मैं कम से कम, ताजदारे ह़रम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

ग़ीबत की 12 जाइज़ सूरतें

﴾1﴿ बद मज़्हब की बद अ़क़ीदगी का बयान ﴾2﴿ जिस की बुराई से नुक़्सान पहुंचने का ख़दशा हो तो दूसरों को उस से बचाने के लिये

ब क़दरे ज़रूरत सिर्फ़ उसी बुराई का तज़्किरा मसलन जो ताजिर धोके से मिलावट वाला माल बेचता हो उस से मुसल्मानों को बचाने के लिये उस के उस नाक़िस माल की निशान देही करना । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो उस को लोग कब पहचानेंगे ! फ़ाजिर का ज़िक्र उस चीज़ के साथ करो जो उस में है ताकि लोग उस से बचें । (سنن کبری، 10/354، حدیث:20914) ﴿3﴾ मसलन कारोबारी, शिराकत दारी या शादी वग़ैरा के लिये मश्वरा मांगने पर जिस के बारे में मश्वरा मांगा गया है उस के अगर ऐसे उ़यूब मा'लूम हैं जिस से नुक़्सान पहुंच सकता है तो ज़रूरतन सिर्फ़ वोही उ़यूब बताना ﴿4﴾ क़ाज़ी (या पोलीस) से इन्साफ़ के हुसूल के लिये फ़रियाद करते वक़्त कि फ़ुलां ने चोरी की, ज़ुल्म किया वग़ैरा ﴿5﴾ जो इस्लाह़ कर सकता हो उस से सिर्फ़ इस्लाह़ की निय्यत से शिकायत की जा सकती है मसलन मुरीद की पीर से, बेटे की बाप से, बीवी की शौहर से, रिआ़या की बादशाह से, शागिर्द की उस्ताज़ से शिकायत की जा सकती है ﴿6﴾ फ़तवा लेने के लिये नाम ले कर बुराई बयान कर सकता है मगर बेहतर येह है कि मुफ़्ती से भी इशारतन या'नी ज़ैद बक्र में दरयाफ़्त करे । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, 3/177, 178, मुलख़्ख़सन)

पहचान के लिये ज़रूरतन गूंगा बहरा वग़ैरा कहना

﴿7﴾ **किसी** के जिस्मानी ऐब मसलन **अन्धा, मोटा** वग़ैरा सिर्फ़ पहचान के लिये कहना जब कि वोह इस अ़लामत से मा'रूफ़ (या'नी पहचाना जाता) हो अगर बिग़ैर ऐब ज़ाहिर किये भी पहचान हो सकती है तो बेहतर येह है कि नाम के साथ ऐब का तज़्किरा न करे । मसलन ज़ैद **मोटा** है मगर नाम मअ़ वल्दिय्यत बताने या किसी और अ़लामत से तरकीब बन सकती है तो अब मोटा कहने से बचे । चुनान्चे

"रियाज़ुस्सालिहीन" में है : मसलन कोई शख़्स आ'रज (लंगड़े) असम (बहरे), आ'मा (अन्धे), अह्वल (भेंगे) के लक़ब से मश्हूर है तो उस की मा'रिफ़त व शनाख़्त (या'नी पहचान) के लिये इन औसाफ़ व अ़लामात के साथ ज़िक्र करना जाइज़ है मगर तन्क़ीस (या'नी ख़ामी बयान करने) के इरादे से इन औसाफ़ के साथ तज़्किरा जाइज़ नहीं। अगर (ख़ामी भरे) लक़ब के बिग़ैर पहचान हो सकती हो तो बेहतर येह है कि लक़ब बयान न करे। (ریاض الصالحین للنووی، ص404) आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (312 सफ़ह़ात) ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 178 पर है : बा'ज़ मर्तबा महूज़ पहचानने के लिये किसी को अन्धा या काना या ठिगना या लम्बा कहा जाता है, येह **ग़ीबत** में दाख़िल नहीं।

जो खुल्लम खुल्ला बुराई करता हो उस की ग़ीबत

﴾8﴿ खुल्लम खुल्ला लोगों से माल छीन लेने, अ़लल ए'लान शराब पीने, दाढ़ी मुंडाने या एक मुट्ठी से घटाने वग़ैरा वग़ैरा अ़लानिया गुनाह करने वाले कि जिन को इन गुनाहों के मुआ़मले में लोगों से ह़या न रही हो उन की सिर्फ़ उन बातों का तज़्किरा करना ﴾9﴿ ज़ालिम ह़ाकिम के उन मज़ालिम का बयान करना भी जाइज़ है जो खुल्लम खुल्ला करता हो, हां ज़ालिम भी जो बुरा अ़मल छुप कर करता हो उस का बयान **ग़ीबत** है। आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (312 सफ़ह़ात) ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 177 पर है : जो शख़्स अ़लानिया बुरा काम करता है और उस को इस की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे, उस की उस बुरी ह़रकत का बयान करना **ग़ीबत** नहीं, मगर उस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन

को ज़िक्र करना **ग़ीबत** में दाख़िल है। ह़दीस में है कि जिस ने ह़या का ह़िजाब अपने चेहरे से हटा दिया, उस की **ग़ीबत** नहीं। (बहारे शरीअ़त 3/534 ह़िस्सा : 16) **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बैदी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : याद रहे ! इस से (या'नी अ़लल ए'लान जुर्म करने वाले के उस जुर्म के तज़्किरे से) सिर्फ़ लोगों की ख़ैर ख़्वाही मक़्सूद हो, हां जिस शख़्स ने अपना ग़ुस्सा (या भड़ास) निकालने या अपने नफ़्स का इन्तिक़ाम लेने के लिये फ़ासिक़े मो'लिन की मज़्मूम सिफ़ात को बयान किया वोह गुनाहगार है। (اتحاف السادۃ للزبیدی، 9/332)

﴾10﴿ बत़ौरे अफ़्सोस किसी की बुराई बयान करना

किसी ने अपने मुसल्मान भाई की बुराई अफ़्सोस के त़ौर पर (बयान) की, कि मुझे निहायत अफ़्सोस है कि वोह ऐसे काम करता है येह **ग़ीबत** नहीं, क्यूं कि जिस की बुराई की अगर उसे ख़बर भी हो गई तो इस सूरत में वोह बुरा न मानेगा, बुरा उस वक़्त मानेगा जब उसे मा'लूम हो कि इस कहने वाले का मक़्सूद ही बुराई करना है, मगर येह ज़रूर है कि उस चीज़ का इज़्हार इस ने ह़सरत व अफ़्सोस ही की वज्ह से किया हो वरना येह **ग़ीबत** है बल्कि एक क़िस्म का **निफ़ाक़** और **रिया** और अपनी **मद्ह़ सराई** (या'नी अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) है, क्यूं कि इस ने मुसल्मान भाई की बुराई बयान की और ज़ाहिर येह किया कि बुराई मक़्सूद नहीं येह निफ़ाक़ हुवा और लोगों पर येह ज़ाहिर किया कि येह काम मैं अपने लिये और दूसरों के लिये बुरा जानता हूं येह **रिया** है और चूंकि ग़ीबत को **ग़ीबत** के त़ौर पर नहीं किया, लिहाज़ा अपने को सुलह़ा (नेक बन्दों) में से होना बताया येह तज़्किय-ए नफ़्स और ख़ुद सिताई (अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) हुई। (बहारे शरीअ़त, 3/176 ह़िस्सा : 16, 673/9، در مختار، ردالمحتار)

इस जुज़्ये का येह **मदनी फूल** क़ाबिले ग़ौर है कि बयान करने में इज़्हारे अफ़्सोस का अन्दाज़ ऐसा हो कि जिस की **ग़ीबत** की गई उस को पता चल भी जाए तो वोह येह समझे कि येह बेचारा मेरी कोताही की वज्ह से ग़मज़दा हुवा, इस लिये इस ने महज़ अफ़्सोस के तौ़र पर येह बात की है मेरी बुराई करना मक़्सूद नहीं। बहुत सोच समझ कर ज़बान खोलने की ज़रूरत है, महज़ ज़बर दस्ती के अफ़्सोस की कैफ़िय्यत पैदा कर लेना काफ़ी नहीं। आह ! **ग़ीबत** का अ़ज़ाब सहा न जा सकेगा !

बतौ़रे अफ़्सोस ग़ीबत करने से बचने ही में आ़फ़िय्यत है

हक़ीक़त येही है कि **ग़ीबत** जाइज़ होने की अफ़्सोस वाली सूरत में **ग़ीबत** के गुनाह में जा पड़ने का ख़त़रा बहुत ज़ियादा है कि आ़म आदमी के लिये "हक़ीक़ी अफ़्सोस" और "अस्ल ग़ीबत" में फ़र्क़ करना बेहद मुश्किल है चुनान्चे हज़रते अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुतकल्लिमीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم (या'नी इल्मे कलाम के माहिरीन उ़लमा) फ़रमाते हैं कि किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र करना जिस से सामने वाले की तख़्फ़ीफ़ (या'नी तह़क़ीर व तज़्लील) होती हो येह उस वक़्त **ग़ीबत** होगी जब कि इस से (उस की इ़ज़्ज़त को) नुक़्सान पहुंचाने और बुराई बयान करने का इरादा करे और (हां) इस का उस (के ऐ़ब) को अफ़्सोस के तौ़र पर ज़िक्र करना **ग़ीबत** नहीं कहलाएगा। येह लिखने के बा'द हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं कि (इस ज़िम्न में) **इमाम समर क़न्दी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी "तफ़्सीर" में फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं जो उन उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने बयान फ़रमाया है इस में अ़ज़ीम ख़त़रा है क्यूं कि इस में (या'नी मैं तो बतौ़रे अफ़्सोस ग़ीबत कर रहा हूं में) इस बात का गुमान है कि लोगों का इस त़रह़

करना (या'नी अपने ख़याल में अफ़्सोस के लिये ग़ीबत करता हूं समझना बे एह़तियाती की सूरत में) उन को उस बात की त़रफ़ ले जाएगा जो मह्ज़ (गुनाह भरी) **ग़ीबत** है लिहाज़ा इस का बिल्कुल तर्क कर देना (या'नी बत़ौरे अफ़्सोस किसी की ग़ीबत न करना) तक़्वा के ज़ियादा क़रीब और ज़ियादा एह़तियात़ पर मब्नी है। (تفسیر روح البیان،9/89) ﴿11﴾ ह़दीस के रावियों, मुक़द्दमे के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जरह़ (या'नी इन के उ़यूब को ज़ाहिर) करना (ردمحتار،9/675) ﴿12﴾ **मुरतद** और काफ़िरे ह़र्बी की बुराई बयान करना। येह बयान कर्दा तमाम सूरतें ब ज़ाहिर **ग़ीबत** हैं और ह़क़ीक़त में गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं और इन उ़यूब का बयान करना जाइज़ है बल्कि बा'ज़ सूरतों में **वाजिब** है।

सुब्ह़ होती है शाम होती है उ़म्र यूं ही तमाम होती है
ख़ूब इन्सां को करती है रुस्वा जब ज़बां बे लगाम होती है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

काफ़िर और मुरतद की ग़ीबत के अह़काम

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! "ज़िम्मी काफ़िर" की **ग़ीबत** ना जाइज़ और "ह़र्बी काफ़िर" और **मुरतद** की जाइज़ है, आज कल दुन्या के तमाम यहूदी, क्रिस्चेन और हर काफ़िर "ह़र्बी" है। मगर पुराने दौर में जब कि मुसल्मानों का ग़लबा था उस वक़्त "ज़िम्मी काफ़िर" भी पाए जाते थे। उन को तक्लीफ़ देना और उन की **ग़ीबत** करना ना जाइज़ था जैसा कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तक्लीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना जहन्नम है।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، حدیث:4860، 7/193) ज़िम्मी

काफ़िर उस मख़्सूस काफ़िर को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत को अपने तह़फ़्फ़ुज़ के लिये जिज़्या (TAX) अदा करे। चुनान्चे "**तफ़्सीरे नईमी**" में है : **जिज़्या** या'नी वोह शर्ई महसूल (TAX) जो हुकूमत अहले किताब (यहूद व नसारा) से उन के जान व माल की हिफ़ाज़त के बदले वुसूल करे। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 10, स. 254, मुलख़्ख़सन)

दे ग़ीबत से तोहमत से नफ़रत ख़ुदाया कि बेशक है इन में हलाकत ख़ुदाया
मेरी ज़ात से दिल दुखे न किसी का मिले मुझ से सब को मसर्रत ख़ुदाया

("ग़ीबत की तबाह कारियां" की किस्त बनाम "किस किस को ऐ़ब बता सकते हैं" ख़त्म हुई।)

120 रसाइले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

(1) हुसैनी दूल्हा (2) मैं सुधरना चाहता हूं (3) अनमोल हीरे (4) बुरे ख़ातिमे के अस्बाब (5) ग़ुस्से का इलाज (6) बा ह़या नौ जवान (7) ज़ुल्म का अन्जाम (8) बुढ्ढा पुजारी (9) चार सन्सनी ख़ेज़ ख़्वाब (10) टीवी की तबाह कारियां (11) गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र (12) ख़ुदकुशी का इलाज (13) सियाह फ़ाम ग़ुलाम (14) करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म (15) मीठे बोल (16) करामाते उ़स्माने ग़नी (17) जन्नती महल का सौदा (18) सगे मदीना कहना कैसा ? (19) क़ब्र की पहली रात (20) समुन्दरी गुम्बद (21) आक़ा का महीना (22) क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात (23) आ़शिक़े अक्बर (24) ख़ज़ाने के अम्बार (25) मदीने की मछली (26) अश्कों की बरसात (27) नह्र की सदाएं (28) भयानक ऊंट (29) ग़फ़्लत (30) ख़ामोश शहज़ादा (31) क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां (32) अबू जह्ल की मौत (33) नेक बनने का नुस्ख़ा (34) वुज़ू और साइन्स (35) क़ियामत का इम्तिह़ान (6) क़ब्र का इम्तिह़ान (37) जोशे ईमानी (38) मुर्दे के सदमे

(39) पुर असरार ख़ज़ाना (40) मुर्दे की बे बसी (41) एह़तिरामे मुस्लिम (42) करबला का ख़ूनीं मन्ज़र (43) 101 मदनी फूल (44) पुर असरार भिकारी (45) अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत (46) तिलावत की फ़ज़ीलत (47) ख़ौफ़नाक जादूगर (48) कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात (49) काले बिच्छू (50) तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह (51) सय्यिदी कुत़्बे मदीना (52) ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी (53) 163 मदनी फूल (54) नमाज़े ईद का त़रीक़ा (55) कपड़े पाक करने का त़रीक़ा मअ़ नजासतों का बयान (56) अब्लक़ घोड़े सुवार (57) जिन्नात का बादशाह (58) सांप नुमा जिन्न (59) खाने का इस्लामी त़रीक़ा (60) वस्वसे और उन का इ़लाज (61) इमामे हुसैन की करामात (62) तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा (63) बरेली से मदीना (64) सुब्हे बहारां (65) कफ़न की वापसी (66) 40 रूह़ानी इ़लाज मअ़ तिब्बी इ़लाज (67) ग़ुस्ल का त़रीक़ा (68) वज़्न कम करने का त़रीक़ा (69) फ़ैज़ाने जुमुआ़ (70) इस्तिन्जा का त़रीक़ा (71) मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये (72) मुन्ने की लाश (73) पान गुटका (74) अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब (75) करामाते शेरे ख़ुदा (76) 28 कलिमाते कुफ़्र (77) ना'त ख़्वां और नज़राना (78) क़सम के बारे में मदनी फूल (79) अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब (80) बिजली इस्ति'माल करने के मदनी फूल (81) शैत़ान के बा'ज़ हथियार (82) ज़ियाए दुरूदो सलाम (83) फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा (84) मदनी वसिय्यत नामा (85) ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल (86) नूर वाला चेहरा (छोटा) (87) फ़ैज़ाने अज़ान (88) क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा (89) नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (90) ज़ख़्मी सांप (91) फ़िरऔ़न का ख़्वाब (छोटा) (92) बेटा

हो तो अैसा (छोटा) (93) वुज़ू का त़रीक़ा (94) ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी (95) मछली के अ़जाइबात (96) हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली (97) मेथी के 50 मदनी फूल (98) सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े (99) चिड़िया और अन्धा सांप (100) बसन्त मेला (101) कबाब समोसे (102) बीमार आ़बिद (103) झूटा चोर (छोटा) (104) मेंडक सुवार बिच्छू (105) दूध पीता मदनी मुन्ना (छोटा) (106) गरमी से ह़िफ़ाज़त के मदनी फूल (107) तज़्किरए मुजद्दिद अल्फ़े सानी (108) मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल (109) बादशाहों की हड्डियां (110) सेल्फ़ी के 30 इ़ब्रत नाक वाक़िआ़त (111) मुसाफ़िर की नमाज़ (112) इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात (113) वीरान मह़ल (114) पुल सिरात़ की दहशत (115) दा'वतों के बारे में सुवाल जवाब (116) हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती (117) 550 सुन्नतें और आदाब (118) वसाइले फ़िरदौस (119) फ़ैज़ाने अहले बैत (120) 25 ह़िकायाते दुरूदो सलाम। (अपडेट : 5 अगस्त 2021)

18 कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

(1) फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) (2) ग़ीबत की तबाह कारियां (3) कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब (4) पर्दे के बारे में सुवाल जवाब (5) मदनी पन्जसूरह (6) इस्लामी बहनों की नमाज़ (7) घरेलू इ़लाज (8) रफ़ीक़ुल ह़रमैन (9) रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन (10) बयानाते अ़त्तारिय्या (ह़िस्सा 2) (11) बयानाते अ़त्तारिय्या (ह़िस्सा 3) (12) नमाज़ के अह़काम (13) नेकी की दा'वत (ह़िस्सए अव्वल) (14) आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात (15) चन्दे के बारे में सुवाल जवाब (16) वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) (17) फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम) (18) फ़ैज़ाने नमाज़। (अपडेट : 25 अक्तूबर 2019 ई.)

हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूले पाक صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो कोई मुसल्मान की दुन्यवी मुसीबत को दूर करेगा **अल्लाह** पाक क़ियामत में उस की मुसीबत दूर करेगा, जो मुसल्मान के ऐब छुपाएगा **अल्लाह** पाक उस के दुन्या व आख़िरत के उ़यूब छुपाएगा, **अल्लाह** बन्दे की मदद करता रहता है जब तक वोह अपने भाई की मदद करता है।"

(مسلم، ص1110، حدیث:6853 ملتقطا)

978-969-722-231-5
01082227

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net